सेवा भारती (मध्यभारत) भोपाल

सेवा परमो धर्म:

वार्षिक प्रतिवेदन एवं वार्षिक लेखे
वर्ष : 2014-15

कार्यालय पता

सेवा भारती (मध्यभारत), भोपाल

मातृछाया (शिशु कल्याण केन्द्र), स्वामी रामतीर्थ नगर, मैदामिल के पास,

होशंगाबाद रोड़, भोपाल- 462 001

दूरभाष क्रमांक : 0755–2559597, 2762158 ई–मेल : swbharti@yahoo.co.in

web- http://sewabhartimadhyabharat.in

आदरणीय स्व. श्री विष्णु कुमार जी

जन्मतिथि- 05 मई, 1933

पुण्यतिथि- 25 मई, 2009

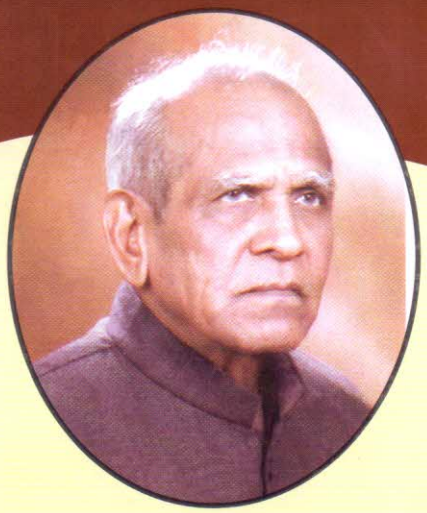

संक्षिप्त जीवन परिचय

सेवा भारती के संस्थापक आदरणीय स्व. श्री विष्णु कुमार जी का जन्म बंगलुरु से 90 किलो मी. दूर ग्राम चिकबल्लारपुर के एक सुसंस्कृत एवं सुशिक्षित मध्यम वर्गीय परिवार में दिनांक 05 मई 1933 में हुआ। बैंक में कोषपाल के पद पर कार्यरत् श्री अनन्त राजैया और उनकी पत्नि श्रीमती सुनन्दा के 6 पुत्रों और 1 पुत्री में विष्णु जी सबसे छोटी संतान थे।

श्री विष्णु कुमार जी कक्षा 6वीं से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ गये थे। बंगलुरु के प्रसिद्ध नेशनल कॉलेज से बी.ई. मैकेनिकल करने के उपरान्त हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट लिमिटेड की आकर्षक नौकरी ठुकरा कर वे प्रचारक बन गए। कानपुर, काशी, पीलीभीत आदि स्थानों में प्रचारक के रूप में कार्य किया। 1977 में प्रौढ़ कार्य के लिये आपको दिल्ली भेजा गया। स्व. बालासाहब देवरस जी के सामाजिक कार्यों को गति प्रदान करने के आह्वान पर श्रद्धेय विष्णु जी ने सेवा कार्यो का प्रारम्भ किया तथा दिल्ली में सेवा भारती संस्था की स्थापना की। हजारों सेवा कार्य खड़े करने के पश्चात् विष्णु कुमार जी को मध्यक्षेत्र के सेवा प्रमुख के रूप में वर्ष 1995 में भोपाल भेजा गया। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में संचालित सेवाकार्यों को प्रारम्भ करने का श्रेय आपको है।

लम्बी बीमारी के बाद श्री विष्णु कुमार जी दिल्ली में दिनांक 25 मई, 2009 को वैकुण्ठवासी हुये।

सेवा भारती (मध्यभारत) भोपाल

सेवा परमो धर्म:

वार्षिक प्रतिवेदन एवं वार्षिक लेखे
वर्ष : 2014-15

कार्यालय पता

सेवा भारती (मध्यभारत), भोपाल

मातृछाया (शिशु कल्याण केन्द्र), स्वामी रामतीर्थ नगर, मैदामिल के पास,

होशंगाबाद रोड़, भोपाल- 462 001

दूरभाष क्रमांक : 0755–2559597, 2762158 ई–मेल : swbharti@yahoo.co.in

web- http://sewabhartimadhyabharat.in

वार्षिक प्रतिवेदन- वर्ष : 2014-15

सम्माननीय सभासदगण,

सेवा भारती का वित्त वर्ष 2014–15 का 25वाँ वार्षिक प्रतिवेदन और ऑडिट रिपोर्ट अवलोकनार्थ आपके कर–कमलों में प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

आज से 25 वर्ष पूर्व सेवा भारती के बिरवे को अपने कर–कमलों से भोपाल की भूमि में रोपित करने वाले आजीवन सेवावृती स्व. श्री विष्णु कुमार जी का पुण्य–स्मरण करते हुए, यह कहते हुए पुनः प्रसन्नता हो रही है कि आज सेवा भारती 25 वर्ष का लहलहाता हुआ छायादार, फलदार वृक्ष का रूप ले चुका है। इसकी तीन शाखाओं ने महाकौशल, मालवा और छत्तीसगढ़ में अपनी जड़ें जमाकर सशक्त वृक्ष का रूप धारण कर लिया है। इतना ही नहीं, यह सेवा भारती का पौधा तुलसी के पौधे के समान देश के विभिन्न भागो में भी रोपा जा चुका है। उदारमना दान–दाताओं के खाद–पानी से तथा कर्मठ–निष्ठावान कार्यकर्त्ताओं की निंदाई–गोड़ाई और देखभाल से यह वर्तमान स्वरूप ले पाया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और समरसता से ओत–प्रोत अनेक प्रकल्प इसकी छत्रछाया में चल रहे हैं तथा वनवासी ग्रामवासी बन्धु–भगिनी लाभान्वित हो रहे हैं। इसका विवरण आगे दिया गया है।

सेवा भारती के कार्यकर्ताओं के कठिन परिश्रम और निष्ठा का निचोड़ वार्षिक प्रतिवेदन है और उसी प्रकार सहृदय दानदाताओं के वित्तीय अवदान का पारदर्शी वित्तीय लेखा–जोखा ऑडिट रिपोर्ट के रूप में आपके सामने आया है। इस वर्ष नई नीति के अन्तर्गत क्षेत्रीय दायरा कम हो जाने के बाद भी सेवा भारती मध्यभारत के पास 759 प्रकल्प हैं एवं अन्य पंजीकृत सेवा भारती के सेवा कार्य मिलाकर कुल 838 प्रकल्प है। सेवा भारती के सक्रिय कार्य क्षेत्र सीमित हो जाने का एक लाभ यह हुआ है कि अब हम विस्तृत कार्य की अपेक्षा गहन कार्य नीति अपनाएँगे अर्थात् हमारे जितने प्रकल्प हैं उन्हीं को सबल, सक्षम और समुन्नत बनाने का प्रयास किया जाएगा। केन्द्र शासन के जनजाति कल्याण मंत्रालय से विगत चार–पाँच वर्षों से अनुदान नहीं मिल रहा है, चलित चिकित्सा वाहन प्रकल्प के भी अगले वित्त वर्ष से बन्द होने की आशंका है। इसी तरह हमारी आय के संसाधन कम हो गए हैं, इसके विपरीत मँहगाई वृद्धि के कारण कार्यकर्ताओं के मानधन, वाहन व्यय, खाद्यान्न सामग्री एवं व्यय भार बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार आय कम और अधिक व्यय वाली घाटे की अर्थ–व्यवस्था नहीं हो सकती। मुनाफे के बजट का प्रश्न ही नहीं उठता आर्थिक संकट से उबरने के लिए वर्तमान में संचालित प्रकल्पों के राजस्व व्यय की पूर्ति के लिए हमें सी.एस.आर. के अन्तर्गत आय के अन्य स्त्रोत खोजने होंगे। सहृदय दानदाताओं से अपील करना पड़ेगी धनराशि जुटाना होगी।

इसके अतिरिक्त आनन्दधाम में भवन निर्माण और आवासीय विद्यालय डबरा में प्रथम तल के निर्माण में